[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3416

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

आधुनिक युग में मंच की तकनीक

यशस्वी गुप्ता
मॉस्टर ऑफ परफोर्मिंग आर्टस–ट (वादन सितार)
संगीत एवं नृत्य विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

किसी भी कला अथवा विशिष्ट विचारों की प्रस्तुति के लिए कलाकार जिस विशिष्ट स्थान पर विराजमान होते हैं उसे मंच कहा जाता है। रंजकता इसका प्रमुख विषय होने के कारण इसी को रंगमंच भी कहते हैं। पाश्चात्य देशों अथवा अंग्रेजी भाषा में इसे स्टेज कहा जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि मानव के उद्भव से पूर्व भी रंगमंच देवी देवताओं में प्रचलित था। जेसे भगवान शिव का कैलाश पर्व, माता वागीश्वरी का हस्त में वीणा लेकर मयूर पर बैठना तथा इन्द्र के दरबार में गांधर्व, किन्नर, एवं अप्सराओं को नृत्य आदि मंच के अस्तित्व की ओर ही संकेत करते हैं। भारतीय संगीत एवं नाट्य परम्परा के अनुसार सर्वप्रथम संस्कृत साहित्य के सुप्रसिद्ध ग्रंथ नाट्य शास्त्र में रंगमंच का उल्लेख मिलता है। प्राचीनकाल में ऋषि मुनि जब तपस्या करते थे तो किसी न किसी उच्च स्थान पर समाधिस्थ होते थे। इसी प्रकार राजा व सम्राट आदि भी किसी उच्चतम आसन पर आसीन होकर ही सभा को संबोधित किया करते थे। क्योंकि कला जीवन का एक अनिवार्य अंग है, अतः सभ्यता एवं संस्कृति के विकास के साथ–साथ कलात्मक तत्वों का विकास होना भी स्वाभाविक है। विकास के इसी लम्बे क्रम के परिणाम स्वरूप मंच अथवा रंगमंच का आधुनिक रूप प्राप्त हो सकता है।

मंच पर सफलता प्राप्त करने के लिए कलाकार को अपने प्रदर्शन की तैयारी बड़ी समझ बूझ के साथ करनी चाहिए। देश, काल तथा सामाजिक परिस्थिति का ध्यान रखेते हुए कलाकार मंच प्रदर्शन को सशक्त बना सकता है। प्रदर्शन से पूर्व कलाकार के लिए कुछ महत्वपूर्ण बातें ध्यान रखने योग्य होती हैं।

कलाकार को भी चाहिए की उसे किस प्रकार का मंच चाहिए। मंच का आकार गोल होना चाहिए अथवा आयताकार । मंच की ऊँचाई तथा निचाई का विशेषकर ध्यान रखा जाना चहिए। दर्शकों का बैठने का स्थान यदि सीढ़ीनुमा है तो प्रत्येक को देखने व सुनने में आसानी रहती है। श्रोता व दर्शकों के तथा मंच के मध्य बहुत अधिक स्थान नहीं दोड़ना चाहिए। जिससे की कलाकार व श्रोता के बीच eye contact ठीक से बना रह सके।

मंच के साथ में सज्जा गृह आवश्यक हे। ताकि कलाकार को रूप सज्जा व अपने वाद्यों को ज्वदम करने में कोई समस्या न आए। मंच पर आने के बाद वाद्यों को मिलाने में बहुत अधिक समरू लेने अथवा गला बार–बार साफ करना मंच पर बुरा प्रभाव डालते है। इसलिए सज्जा गृह का होना अति आवश्यक है जिससे की प्रदर्शन से पूर्व कलाकार अपने वाद्यों को तथा वेश–भूषा को ठीक से देख सके ।

प्रदर्शन से पूर्व रोशनी का प्रबंध भी कलाकार की इच्छा पर निर्भर करता है। प्रत्येक प्रदर्शन के लिए रोशनी का प्रबंध भिन्न भिन्न होता है। जिस प्रकार रोशनी केवल मंच पर हो तथा दर्शकों के स्थान पर अंधेरा हो अथवा कभी–कभी दोनों ही स्थानों पर रोशनी का प्रबंध अलग प्रकार का नृत्य में अलग तथा नाट्य प्रदर्शन में अलग प्रकार से रोशनी का प्रबंध किया जाता है। आजकल महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में होने वाली प्रतियोगिताओं में भी प्रत्येक कला प्रदर्शन के लिए अलग–अलग रोशनी के प्रबंध किए जाते है। यह सब भी कलाकारों की इच्छा पर ही निर्भर करता है।

कलाकार को ध्वनि से सम्बन्धित प्रत्येक उपकरण का ज्ञान होना चाहिए चूंकि यह प्रस्तुति व प्रस्तोता के बीच की एक बहुत ही महत्वपूर्ण इकाई है। ध्वनि उपकरण बहुत ही बढिया स्तर के होने चाहिए। यदि ध्वनि का प्रसार ठीक से नहीं हो पाता है तो बहुत ही बढिया प्रस्तुति के बावजूद भी श्रोता व दर्शकों को इतना आनंद प्राप्त नहीं हो पाता जितना की यदि ध्वनि प्रबंध अच्छे सतर का प्रयोग करने से संभव है। ध्वनि प्रबंध अच्छे स्तर का न होने पर प्रस्तुति का सारा आनंद समाप्त हो जाता है। कलाकार की वेशभूषा का भी कलाकार के व्यक्तित्व व प्रस्तुति से गहरा संबंध है। वेशभूषा के रंगों का चयन व प्रकार भी प्रस्तुति पर गहरा प्रभाव डालती है। वेश–भूषा में शालीनता होनी चाहिए। कलाकार को चाहिए की उसके वेशभूषा इतनी तंग न हो और न ही इतनी ढीली ढाली हो की मंच पर प्रदर्शन के समय परेशा करे। प्रत्येक कल की प्रस्तुति के अनुसार ही उसकी वेशभूषा होनी चाहिए ऐसा नहीं होना चाहिए कि प्रस्तुति शास्त्रीय संगी की है और कलाकार परस्पर सभ्यता की

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

वेश–भूषा धारण कर मंच पर आ जाए और यदि कोई प्रस्तुति ऐसी है पश्चिमी सभ्यता की वेश–भूषा हो उसमें इस प्रकार की धारण कर ली जाए की उस समय प्रस्तुति में समस्या हो अतः वेशभूषा का चयन बहुत ही महत्वपूर्ण पक्ष है।

किसी भी कार्यक्रम की सफलता के लिए उस कार्यक्रम में प्रस्तुत किए जाने वाले कार्यक्रमों का समय विभाजन करना सबसे प्राथमिक और अनिवार्य भाग होता है। आज समय का अभाव है और जो गतिशील है। कलाकार को चाहिए की उसकी प्रस्तुति यथोचित रस प्रदान करने वाली तथा निश्चित अवधि में समाप्त हो जाने वाली हो। मंच पर आने से पूर्व ही कलाकार के साज मिले हुए हों तथा अन्य कार्य जैसे रूप सज्जा तथा वेश–भूषा भी समय से पूर्व तैयार हो।

किसी भी कार्यक्रम के अन्तर्गत जब दो से अधिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाने हो तो उस कार्यक्रम के लिए निर्धारित स्थान तथा दर्शक एवं श्रोताओं की उपलब्धता एवं मानसिकता के आधार पर समय विभाजन किया जाता है। समय विभाजन करते समय इस बात का विशेष रुप से ध्यान रखा जाना चाहिए कि प्रत्येक प्रस्तुति के लिए दर्शक एवं श्रोता तथा स्थान उपलब्ध हो सके। कार्यक्रम का समय विभाजन इस प्रकार हो कि प्रत्येक कार्यक्रम समय पर सम्पन्न हो तथा कलाकार व श्रोताओं को किसी भी प्रकार की कठिनाई का सामना न करना पड़े।

आदिकाल में कलाकार अपनी कला को किसी भी स्थान पर चाहे वह खुला मैदान ही क्यों न हो, प्रस्तुत करता था लेकिन आधुनिकता के साथ–साथ संगीत क्षेत्र में भी मंच का महत्वपूर्ण स्थान है। आज कलाकार की कलाकारी भव्य मंच पर ही निर्भर करती है जितना बड़ा मंच होगा कलाकारी अपनी कला को उतने ही सुंदर–स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करता है । इसलिए आधुनिक युग में मंच का स्थान उतना ही महत्वपूर्ण है जितना किसी भी कलाकार का।

दर्शकों को मानसिकता व प्रस्तुतकर्ता से संबंध मंच कलाकार और श्रोता के मध्य प्रत्यक्ष सम्बन्ध स्थापित करने का मध्यम है। मंच प्रदर्शन द्वारा ही कलाकार अपनी कला को श्रोताओं अथवा रसिकों के सन्मुख प्रस्तुत करता है। मंच प्रदर्शन के द्वारा ही श्रोता कलाकार को प्रत्यक्ष रूप से देख व सुन सकते हैं। आत्म विश्वास के साथ अपनी कला का प्रदर्शन करते हुए श्रोताओं व दर्शकों को आनान्दित करना कलाकार का प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए। कलाकार की कला का प्रमुख उद्देश्य **परांतः सुखाय** ही होना चाहिए।

प्रस्तुतकर्ता को श्रोताओं की मानसिकता को जान लेना चाहिए जिससे की कार्यक्रम को सफल बनाया जा सके। मनुष्य के क्रियाकलाप और उसकी मनोवृति का प्रभाव कला पर भी पड़ता है। अतः कलाकार को श्रोताओं के सामने विनम्रता व शालीनता जैसे गुणों के साथि पेश होना चाहिए। इसमें इतनी योग्यता होनी चाहिए की वह श्रोताओं की आशा के अनुरूप अपनी कला का प्रदर्शन कर सके। प्रत्येक सभा में चाहे वह संगीत संबंध हो अथवा नृत्य संबंधी या फिर नाटक संबंधी में विद्वान, स्त्रियां, बच्चे, मूर्ख, कलाकार, रसज्ञ एवं असहृदय सभी प्रकार के श्रोता उपस्थित रहते हैं सभा के बीच में यदि कोई श्रोता किसी विशेष गीत अथवा भजन की मांग करते हैं तो कलाकार को उनकी मांग अवश्य पूरी करनी चाहिए।

शास्त्र में कलाकार को 'रंग–कर्मी' कहा गया है। कलाकार को चाहिए कि वह संगीत सम्मेलन अथवा मंच प्रदर्शन में श्रोताओं को सम्मान की दृष्टि से देखे। कलाकार संगीत की मधुर चिन्ताकर्षक स्वरावलिपियों में आत्म विभोर होकर स्वयं उससे जितना आनन्द रस प्राप्त करता है उतना ही वह दर्शकों या श्रोता को भी देना चाहता है। अपने आनंद को केवल अकेला ही न भोग कर दूसरों के साथ सहभागी बनने में उसे वास्तविक आनंद की अनुभूति होती है। कलाकार को यदि श्रोताओं के रूप में कोई एक सच्चा भागीदार मिल जाता है तो उस समय वह आनन्द तरीके से झूम उठता है और उसके आनंद को कोई सीमा नहीं रहता। सिद्धहस्त कलाकार अपने दृढ़ विश्वास के कारण चाहे कोई भी स्थान हो, चाहे कोई भी समय हो, चाहे जो भी राग प्रस्तुत करता हो उसी में सभी वर्ग के श्रोताओं को खुश कर लेता है। उसे श्रोताओं की मनःस्थिति की भली–भांति पहचान है। यही नहीं प्रत्येक कलाकार अपनी कला प्रदर्शन के विषय में रसिक श्रोताओं की सम्मति जानने के लिए अत्यन्त ही उत्सुक रहता है। उनके मुख से अपनी कला की प्रशंसा सुनकर वह फूला नहीं समाता। फिर तो वह उन पर पूर्णतः न्यौछावर हो जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि कलाकार में आत्मविश्वास और भी बढ़ जाता है और उसकी कल्पना में एक नए जीवन और स्फूर्ति का संचार होने लगता है। श्रोता को भी चाहिए कि वह कला प्रदर्शन के बीच मार्मिक स्थलों पर कलाकारों को समय–समय पर दाद उन्हें प्रात्साहित करता रहे ताकि उत्तम कला–प्रदर्शन देने के लिए उन्हें प्ररेणा मिलती रहे। गुणग्राही श्रोताओं को पाकर कलाकार अपनी प्रस्तुति को सफल मानता है। चाहे श्रोता प्रबुद्ध वर्ग के हों या साधारण वर्ग जब कलाकार उनकी रूचि को समझ कर अपनी कला का प्रदर्शन करता है तो, न केवल उसे आत्मसन्तुष्टि होती है वरन श्रोताओं को भी आनन्द का अनुभव होता है चित्रकार सुन्दर चित्र बनाता है तो दर्शकों या श्रोताओं के लिए कवि रसपूर्ण व भावपूर्ण कविताएं

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

रचता है तो रसिक पाठकों के लिए और मूर्तिकार मूर्तियों का निर्माण करता है या फिर भवन निर्माण विशेषज्ञ अपनी कला को अधिक से अधिक सुन्दर स्वरूप प्रदान करता है तो दर्शकों के हृदयों को चमत्कृत और आहलादित करने के लिए, केवल अपने लिए नहीं। तात्पर्य यही है कि अरूचि उत्पन्न करना या श्रोताओं को उबाने वाली हरकतों से कलाकार को बचना चाहिए कार्यक्रम के प्रारम्भ और अंत में प्रणतभाव से मंच स्पर्श और श्रोताओं को प्रणाम करना भी कलाकार के लिए आवश्यक अंग है वह कला और कलाकार के प्रति श्रद्धा, गुणानुराग श्रोता का परिचायक है। मंच को श्रेष्ठ कलाकार और कलाकार को श्रेष्ठ श्रोता की अपेक्षा रहती है।

संगीत समारोह आयोजित करने में बड़ा परिश्रम करना होता है। समारोह को पूर्णतः सफल बनाने हेतु, उसे पूर्णतः प्रभावी बनाने हेतु बहुत सी ऐसी प्रक्रियाएं हैं जिनके अभाव में कोई भी कार्यक्रम असफल हो जाता है। आयोजक को किसी भी कार्यक्रम को करने से पूर्व जिन महत्वपूर्ण इकाइयों का निर्धारित करना होता है वे इस प्रकार हैः–

1. बजट के अनुसार तथा श्रोताओं की रूचि का ध्यान रखते हुए कलाकार का ठीक चुनाव और उससे अनुबन्धक। समय से काफी पहले हॉल बुक करना या पंडाल बुक करना।
2. शहर के उत्साही एवं कलाप्रेमी कार्यकर्ताओं की समिति बनाकर उन्हें अलग–अलग कार्यो की जिम्मेदारी सौंपना।
3. मंच व्यवस्था, लाउडस्पीकर व्यवस्था, स्वागत व्यवस्था, जलपान व्यवस्था, आसनिक व्यवस्था, गेटकीपरों की डयूटी, आवश्यक प्रवेश पत्र तथा कार्यकर्ताओं के लिए पहचान पदक बनाना।
4. टिकट विक्रय के लिए केन्द्रों का चुनाव और मनोरंजन कर संबंधी औपचारिकताएं
5. शहर में पोस्टर या बैनर लगाने के लिए सबंधित विभाग से अनुमति लेकर निर्धारित एवं स्वीकृति स्थानों पर उनकी व्यवस्था
6. उच्च पदाधिकारी या कलाकार को मुख्य अतिथि के रूप में निमन्त्रित करने के लिए उनका स्वीकृति पत्र प्राप्त करना।
7. समारोह के लिए पुलिस का आवश्यक बन्दोबस्त करने के लिए नगर से संबंधित बनाने में कुछ सप्ताह पहले आवेदन पत्र भेजना।
8. फोटोग्राफ की व्यवस्था तथा समारोह की प्रेस विज्ञप्ति एवं तत्संबंधी विज्ञापन।
9. माइक्रोफोन तथा लाउडस्पीकर देर रात तक चलाने के लिए पुलिस विभाग से स्वीकृति पत्र लेना।
10. स्वागत सत्कार के लिए आवश्यक सामग्री का संग्रह
11. नगर के विशिष्ठ व्यक्ति, कलाकार, राजकीय अधिकारी तथा पत्रकारों के लिए निमंत्रण पत्र भेजना एवं उनके बैठने से संबंधित आरक्षित स्थान की व्यवस्था।
12. सम्मेलन को सुचारू रूप से चलाने के लिए प्रसन्नचित यो उद्घोषक का चुनाव और उसके लिए आवश्यक कार्यक्रम तैयार करना।
13. यदि कोई स्मारिका प्रकाशित करनी हो तो उसके छापने, विज्ञापन लेने तथा समारोह में उसके वितरण की व्यवस्था करना।
14. आकाशवाणी और दूरदर्शन द्वारा समारोह की रिपोर्टिंग के लिए संबंधित अधिकारियों से आवश्यक पत्र व्यवहार ।
15. संगीत समारोह की समाप्ति के बाद प्रयुक्त साज–समान उचित रख रखाव और अखबारों के लिए चित्र व समाचार भेजने की त्वरित कार्यवाही ।
16. समारोह के पश्चात सम्मानित अतिथियों को धन्यवाद या उपर्युक्त बातों का ध्यान रखने से ही कोई आयोजन सफल होता है और मंच की प्रतिष्ठा बढ़ती है। मंच पर प्रस्तुत की जाने वाली कला को भरत ने यज्ञ बताया है। 'नाटय शास्त्र' में मंच पूजन और मंच प्रवेश का विस्तृत वर्णन दिया है और कहा है कि आँधी से प्रज्जवलित अग्नि भी इतनी शीघ्रता से भस्म नहीं करती जितनी तेजी से कला का अशुद्ध प्रयोग प्रयोक्ता को नष्ट कर डालता।